[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **8695** **GC-4**

Unique Paper Code : 12051202

Name of the Course : **B.A.(Hons.) Hindi CBCS**

Name of the Paper : Hindi Kavita (Reetikalin Kavya)

Semester : II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

विद्यार्थियों के लिए सामान्य **निर्देश** :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. केशव की काव्यकला का विश्लेषण कीजिए। 12

अथवा

रहीम के भाव-सौन्दर्य का विवेचन कीजिए।

2. 'बिहारी की वाग्विदग्धता' का परिचय दीजिए। 12

अथवा

'बिहारी के श्रृंगार चित्रण' की विशेषताएँ बताइए।

3. 'घनानंद के काव्य में प्रेम की धारा प्रवाहित हुई है' सोदाहरण विवेचन कीजिए। 12

अथवा

'नेही महा ब्रजभाषा प्रवीन' पंक्ति के आलोक में घनानंद की काव्यभाषा की विशेषताएँ लिखिए।

4. भूषण के काव्य-शिल्प पर विचार कीजिए। 12

अथवा

नीति-कवि के रूप में गिरिधर कविराय का मूल्यांकन कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 12

(क) हाथी न साथी न घोरे न चेरे, न गाँव न ठांव को नांव बिलैहै।
तात न मात, न मित्र न पुत्र न बित्त न अंगे हू संग न रैहै। 6
केशव काम को राम बिसारत और निकाम न कामहि ऐहै।
चेत रे चेत अजू चित्त अंतर अन्तक लोक अकेलहि जैहै।

अथवा

प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निबहत नाहिं।
रहिमन मैन तुरंग चढ़ि, चलिबो पावक माहिं।
रहिमन पैड़ा प्रेम को, निपट सिलसिली गैल।
बिछलत पाँव पिपीलिका, लोग लदावत बैल।

(ख) इंद्र जिमि जम्भ पर बाडव सुअम्भ पर रावन सदम्भ पर रघुकुल राज है।
पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुण्ड पर भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर त्यौं मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज है।

अथवा

चिंता ज्वाल सरीर की, दाह लगे न बुझाय
प्रकट धुवां नहिं देखिए, उर अंतर धुंधवाय
उर अंतर धुंधवाय, जरै जस कांच की भट्टी
रक्त मांस जरि जाइ, रहै पांजरि की टट्टी
कह गिरिधर कविराय, सुनो रे मेरे मीता
ते नर कैसे जियैं, जाहि व्यापी है चिंता।

6. दिए गए निर्देशों के अनुसार किन्हीं **दो** अवतरणों का रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए। 12

(क) रूप निधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नैकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग छकी मति लाज के साज समाज बिसारे।
एक अचंभौ भयौ घनआनंद हैं नित ही पल पाट उघारे।
टारें टरै नहीं तारे कहूं सु लगे मनमोहन मोह के तारे।

(भाषा सौन्दर्य)

(ख) घाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलि पुंज
जमुना तीर तमाल तरु मीलित मालती कुंज
रनित भृंग घंटावली झरति दान मधु नीर
मंद मंद आवत चल्यौ कुंजर कुंज समीर

(प्रकृति सौन्दर्य

(ग) मीत सुजान अनीति करौ जिन हाहा न हूजिए मोहि अमोही
दीठि कौं और कहूं नहिं, ठौर फिरी दृग रावरे रूप की दोही
एक बिसास की टेक गहे लगि आस रहै बसि प्राण बटोही
हौ घनआनंद जीवनमूल दई कित प्यासनि मारत मोही

(घनानंद का वियोग वर्णन)

(घ) मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झांई परै, स्याम हरित दुति होइ।
दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति
परति गाँठ दुर्जन हिये, दई नई यह रीति।

(शिल्प सौन्दर्य)